बिना नाम
का लड़का

बिना नाम का लड़का

एक छोटा लड़का अपने नाम की तलाश करता है और अंततः अपना नाम पा लेता है और अपने पुराने सपने छोड़ कर नये, सुंदर सपने अपनाता है.

यह सुंदर कहानी इदरिस शाह ने बच्चों के लिये लिखी है और मिडिल ईस्ट और सेंट्रल एशिया की परम्पराओं पर आधारित है. इस कहानी से बच्चों को यह सीख मिलती है कि धीरज और संकल्प से ही हम अपने सपनों को सत्य कर सकते हैं.
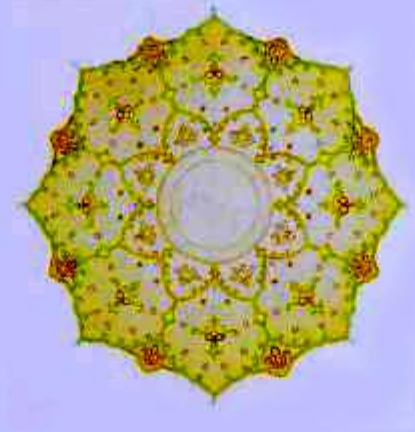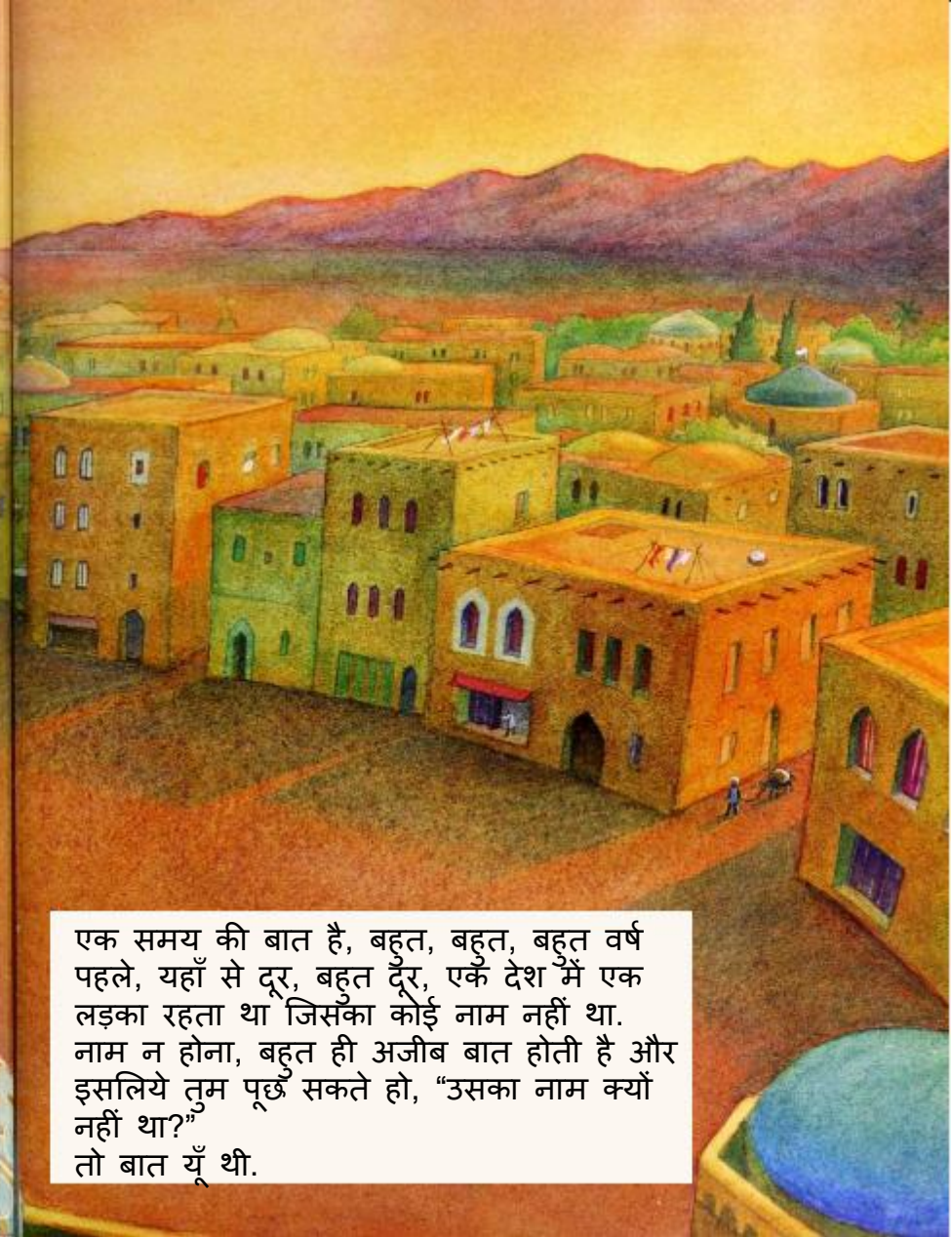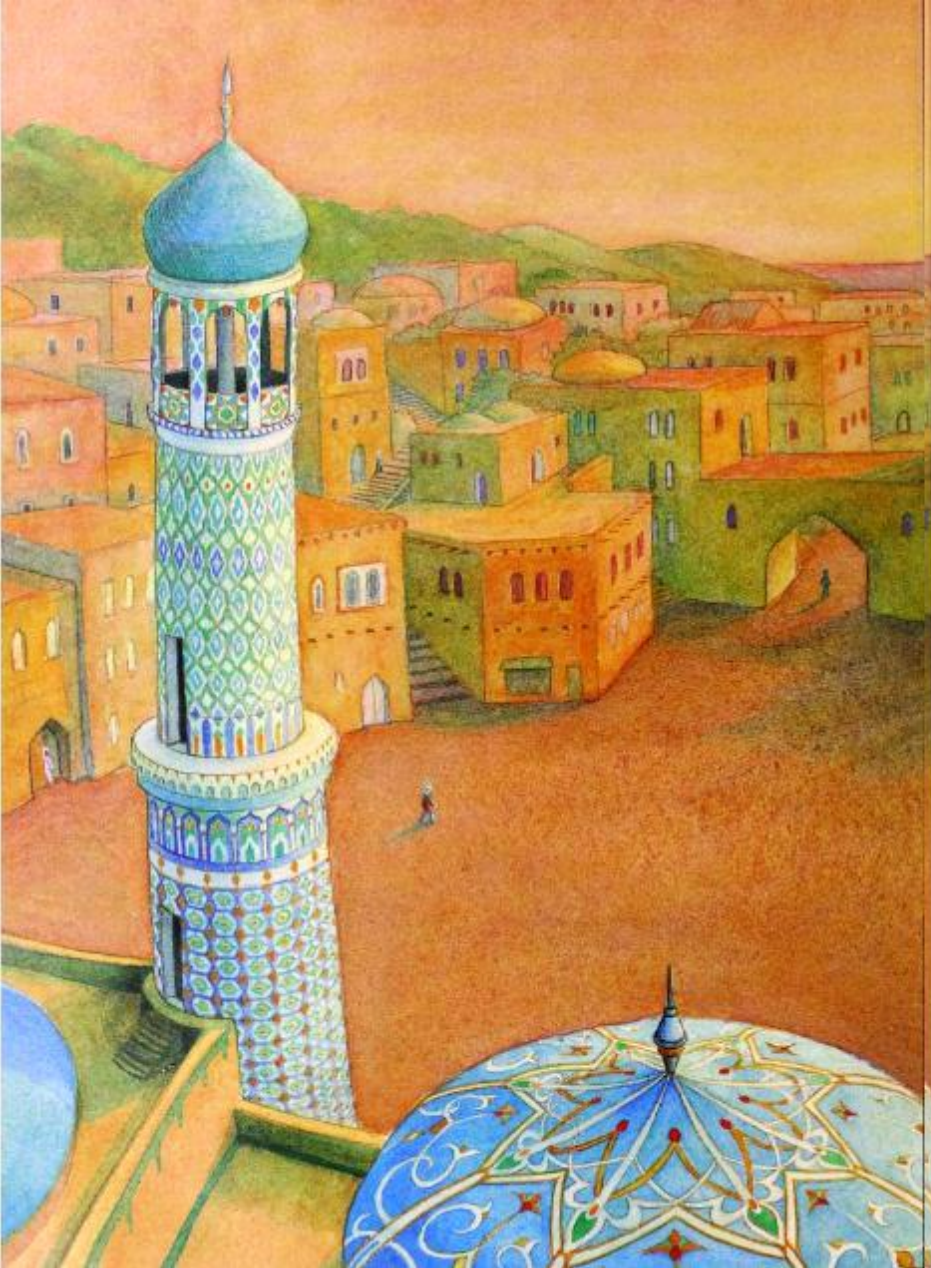
एक समय की बात है, बहुत, बहुत, बहुत वर्ष पहले, यहाँ से दूर, बहुत दूर, एक देश में एक लड़का रहता था जिसका कोई नाम नहीं था.
नाम न होना, बहुत ही अजीब बात होती है और इसलिये तुम पूछ सकते हो, “उसका नाम क्यों नहीं था?”
तो बात यूँ थी.
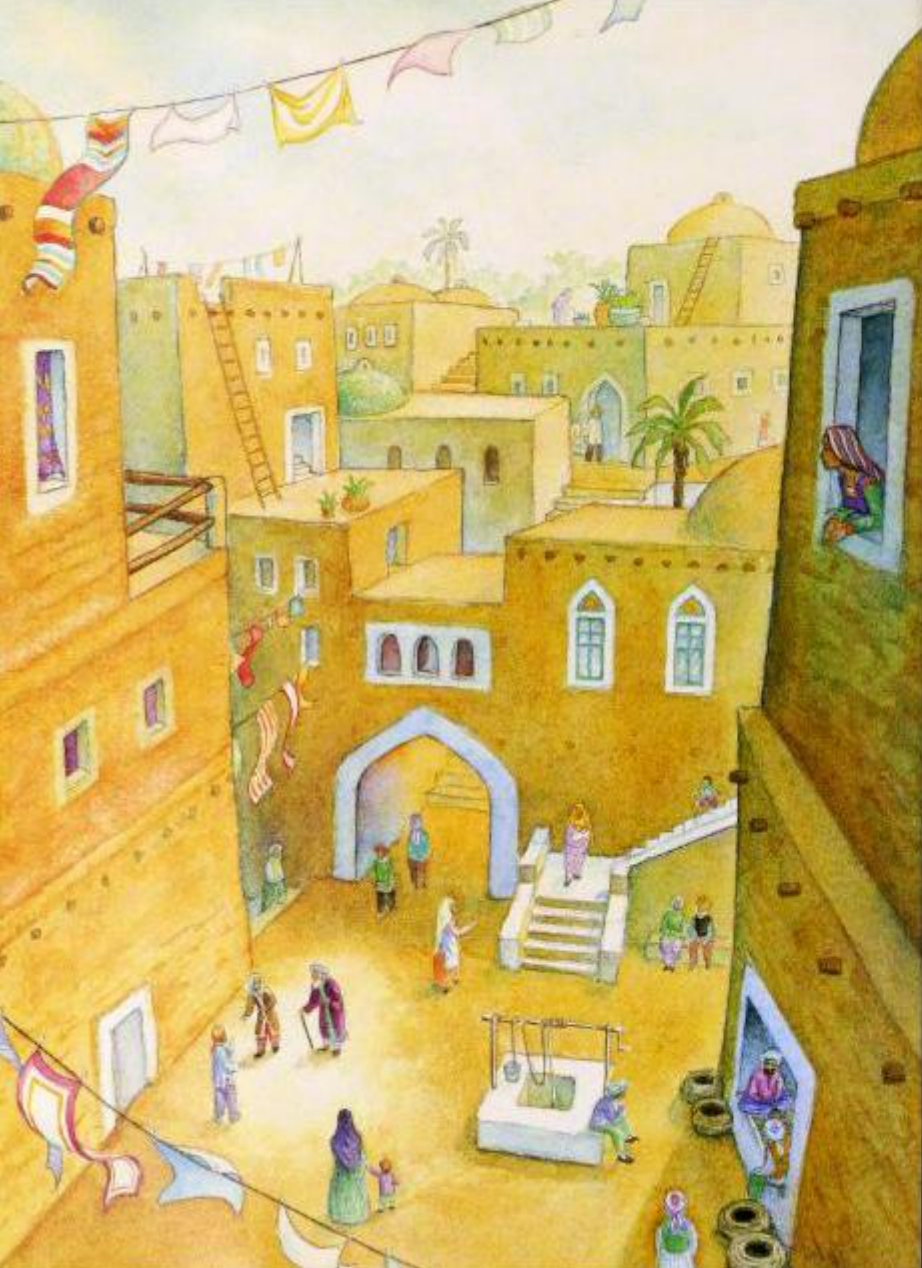
जिस दिन उस लड़के का जन्म हुआ था और उसके माता-पिता उसके लिए एक नाम चुनने ही वाले थे कि एक ज्ञानी पुरुष उनके घर आये. “यह लड़का बहुत, बहुत भाग्यशाली है,” ज्ञानी ने कहा, “और एक दिन मैं इसे एक अद्भुत वस्तु दूँगा. लेकिन पहले मुझे इसे इसका नाम देना होगा. इसलिये मेहरबानी करके अभी इसे कोई नाम न दें.”

“ठीक है,” उसके माता-पिता ने कहा. “लेकिन इसे इसका नाम कब मिलेगा?”

“वह मैं अभी नहीं बता सकता,” ज्ञानी ने कहा. “लेकिन स्मरण रहे, यह बहुत भाग्यशाली लड़का है और आपको ध्यान रखना होगा कि इसे कोई नाम नहीं दें.”

तो उसके माता-पिता उसे ‘बेनाम’ कह कर बुलाने लगे. उस देश की भाषा में इसका अर्थ था, बिना किसी नाम का. क्योंकि उस लड़के का कोई नाम नहीं था.

एक दिन 'बेनाम' अपने एक दोस्त से मिलने गया जो अगले घर में रहता था. "हर किसी का नाम होता है और मैं चाहता हूँ कि मेरा भी एक नाम हो. क्या तुम्हारे पास एक नाम है जो तुम मुझे दे सकते हो?" उसने दोस्त से पूछा.

दूसरे लड़के ने कहा, "मेरे पास एक ही नाम है, वह है अनवर. वही मेरा नाम है और वह नाम मुझे चाहिये. अगर वह नाम मैंने तुम्हें दे दिया तो मेरे पास कौन सा नाम रहेगा? और अगर मैं तुम्हें अपना नाम दे दूँ, तो बदले में तुम मुझे क्या दोगे? तुम्हारे पास तो कुछ भी नहीं है."
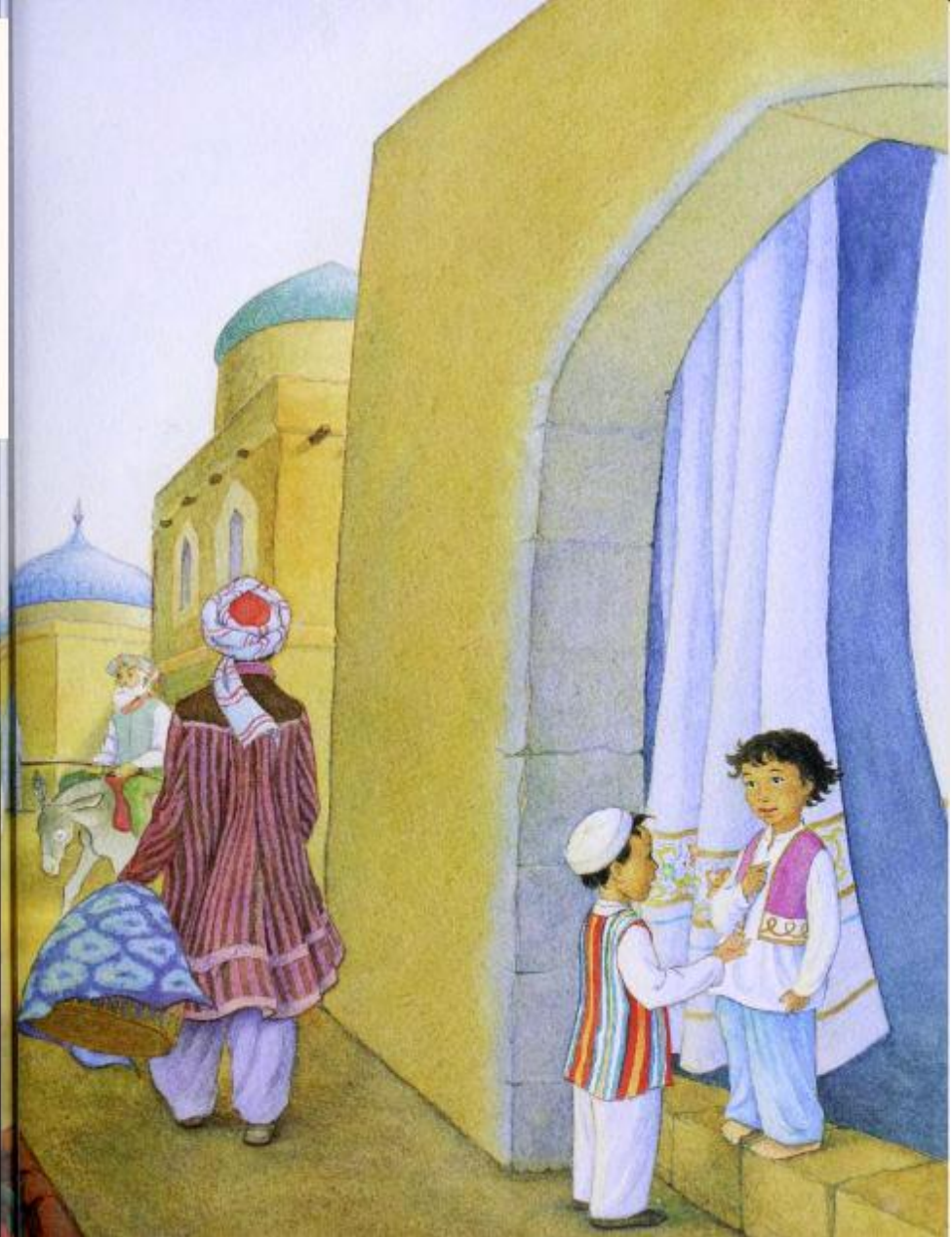
“मेरे पास एक ऐसा सपना है जो मुझे नहीं चाहिये. मैं तुम्हें वह दे सकता हूँ,” ‘बेनाम’ ने कहा.

“लेकिन हमें यह किस तरह पता चलेगा कि एक नाम कैसे लिया जा सकता है और एक सपना कैसे एक से दूसरे को दिया जा सकता है?” अनवर ने पूछा.

“मैं जानता हूँ,” ‘बेनाम’ ने कहा, “चलो चलकर ज्ञानी पुरुष से पूछते हैं!”

अब वह ज्ञानी सब कुछ जानते थे और सौभाग्यवश वह दूर भी नहीं रहते थे.
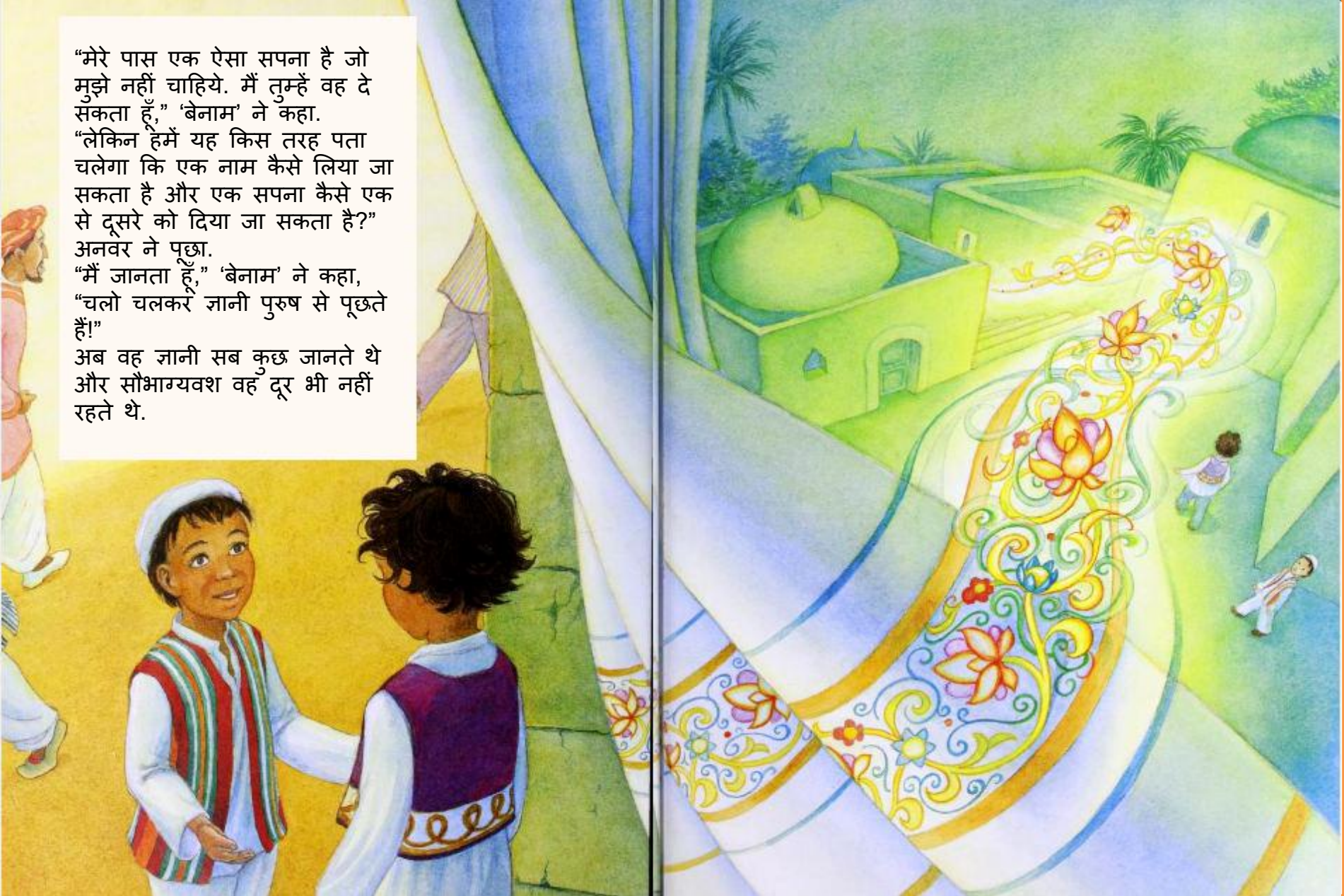
“यहाँ बैठ जाओ और
मैं देखता हूँ कि
मेरे जादू के पिटारे में
क्या है,” उन्होंने कहा.

दोनों लड़के
उस ज्ञानी के निकट
गद्दों पर बैठ गये.

और उन्होंने एक
छोटा-सा पिटारा निकाला
और कहा, “यह एक जादू
का पिटारा है और इस में
हर तरह के नाम ठसाठस
भरे हुए हैं. ज़रा देखो.”
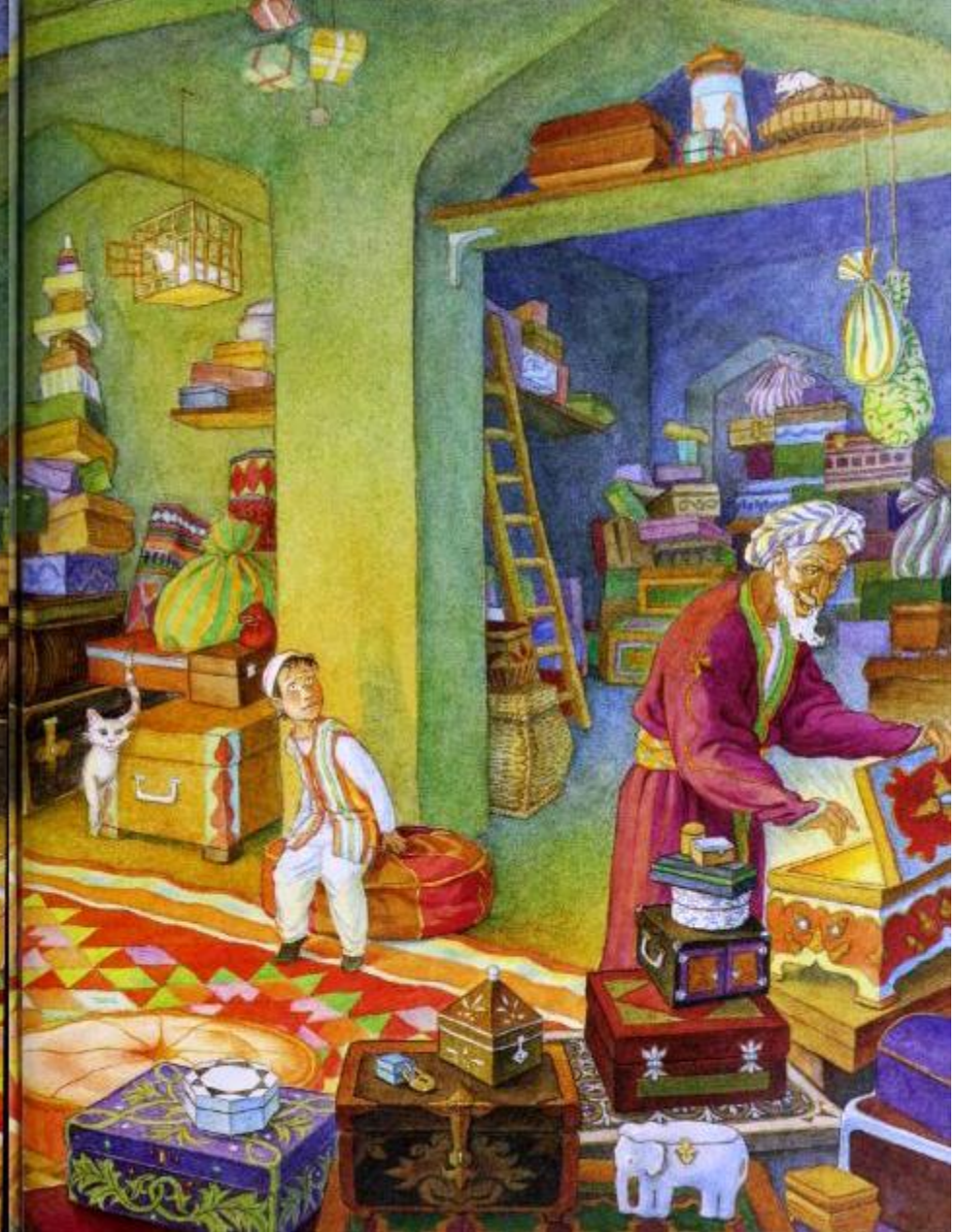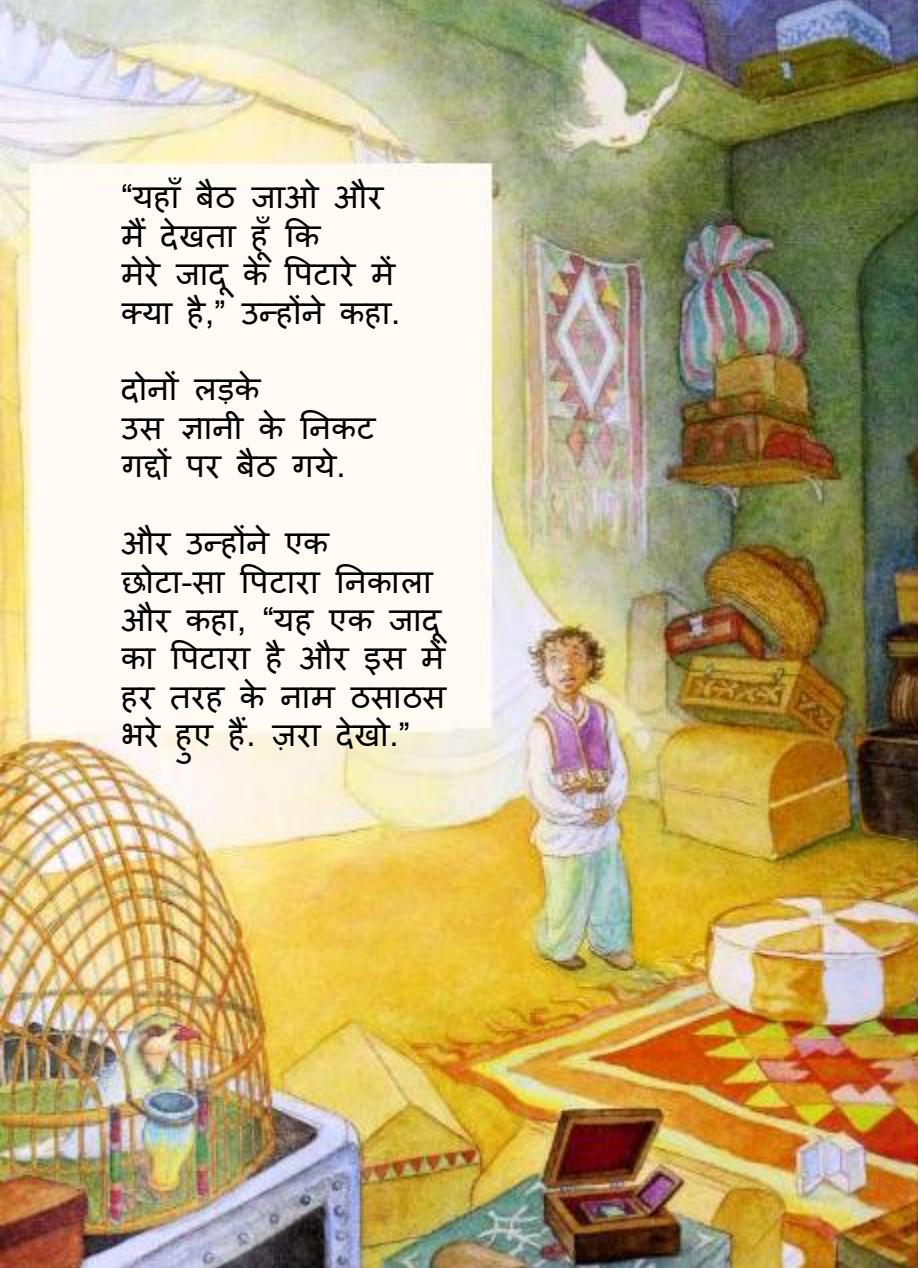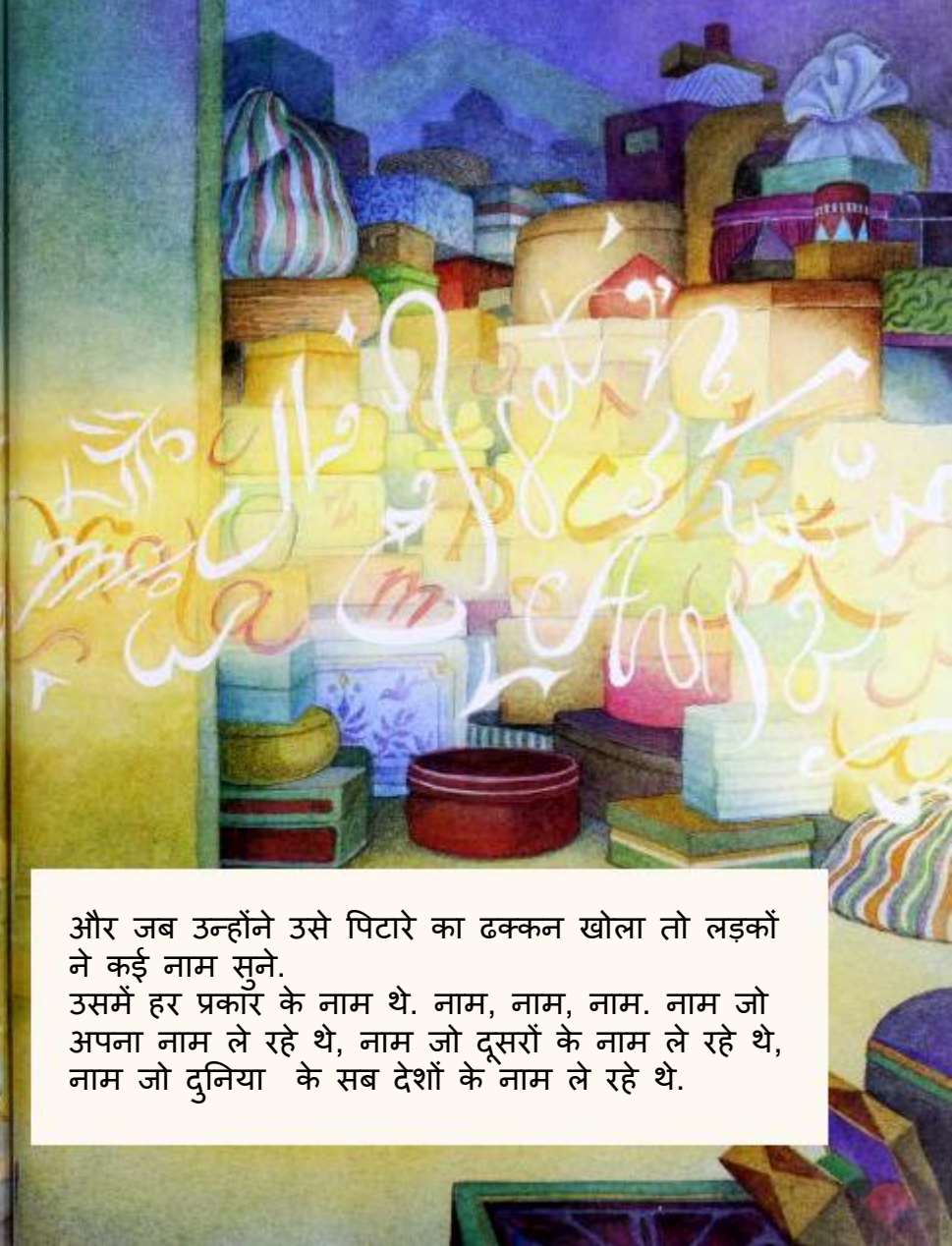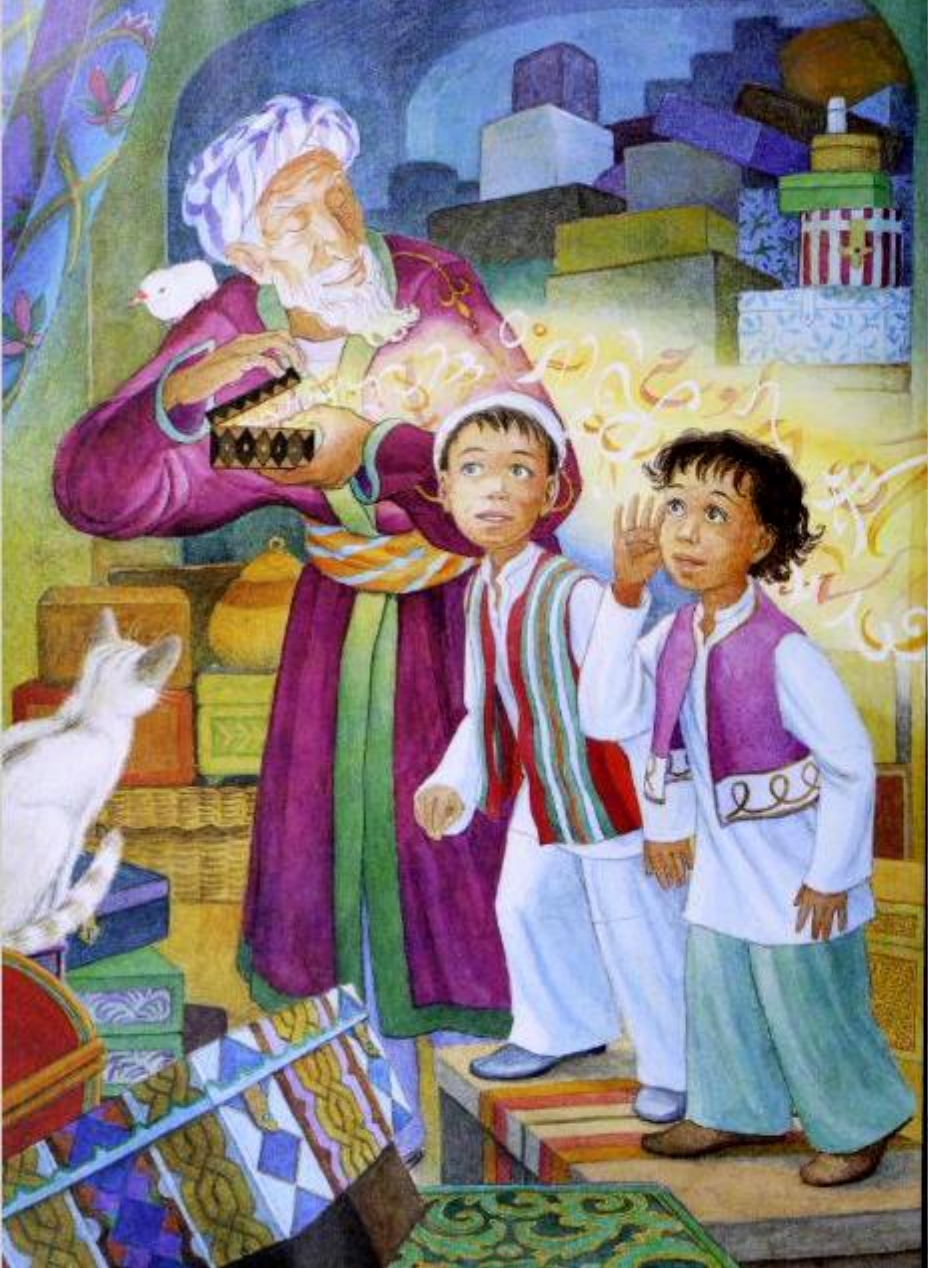
और जब उन्होंने उसे पिटारे का ढक्कन खोला तो लड़कों ने कई नाम सुने.
उसमें हर प्रकार के नाम थे. नाम, नाम, नाम. नाम जो अपना नाम ले रहे थे, नाम जो दूसरों के नाम ले रहे थे, नाम जो दुनिया के सब देशों के नाम ले रहे थे.

और ज्ञानी पुरुष ने पिटारे से एक नाम निकाला और 'बेनाम' लड़के को दे दिया. नाम उछल कर उसके हाथ में आ गया और उसकी बाँह पर भागता हुआ उसके कंधे पर चढ़ गया और वहां से कूद कर उसके कान में चल गया और फिर उसके सिर के भीतर प्रवेश कर गया.
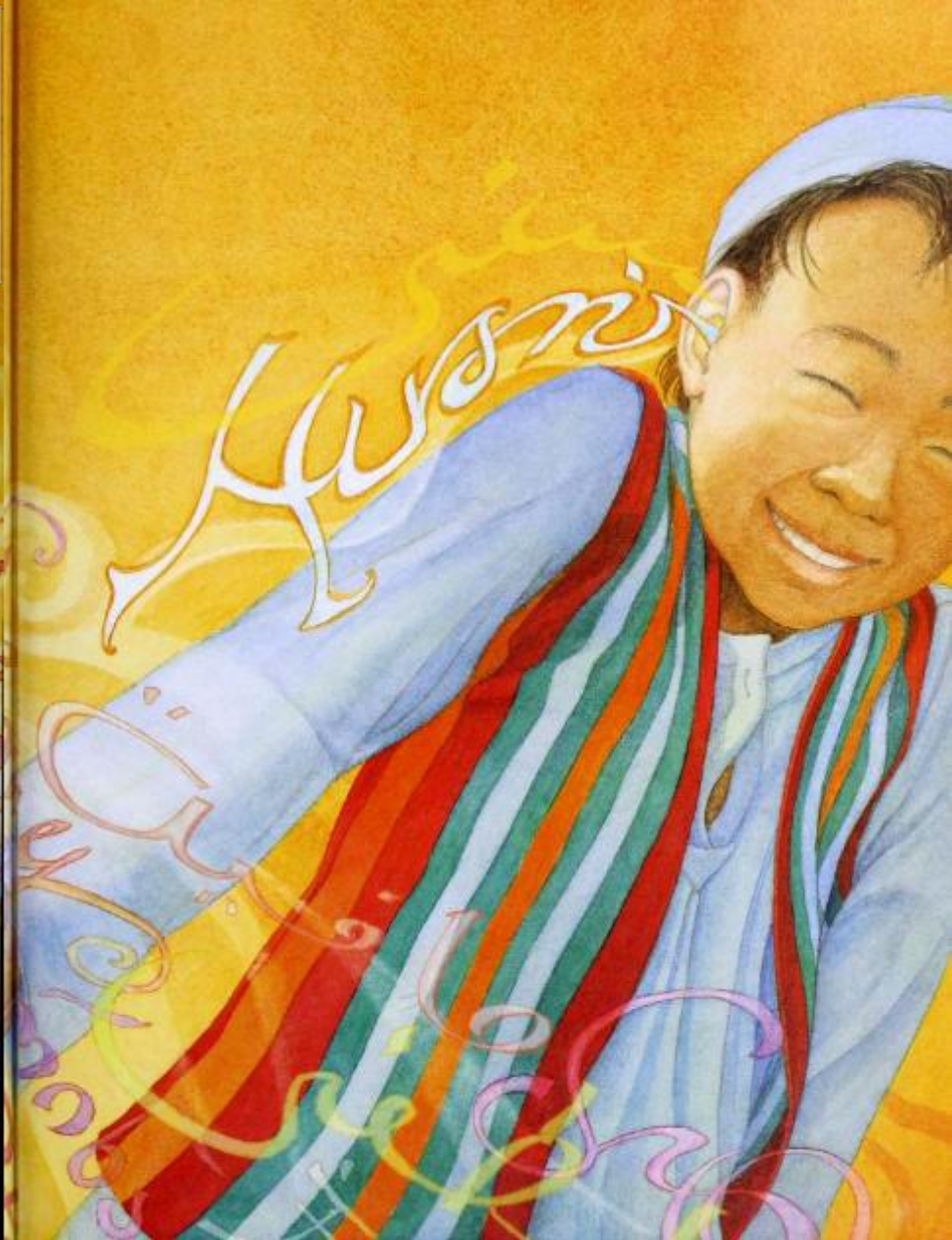
और अचानक उस लड़के को लगा कि उसका
एक नाम है!
“हुर्रे! हुर्रे!” वह बोला, “मेरा भी नाम है.
मैं हुसनी हूँ!”
हुसनी उसका नाम था.
फिर अनवर चिल्ला कर बोला, “लेकिन
मुझे वह सपना चाहिये जो हुसनी ने
मुझे देने का वादा किया था!”
“धीरज रखो, लड़के!” ज्ञानी पुरुष ने कहा.
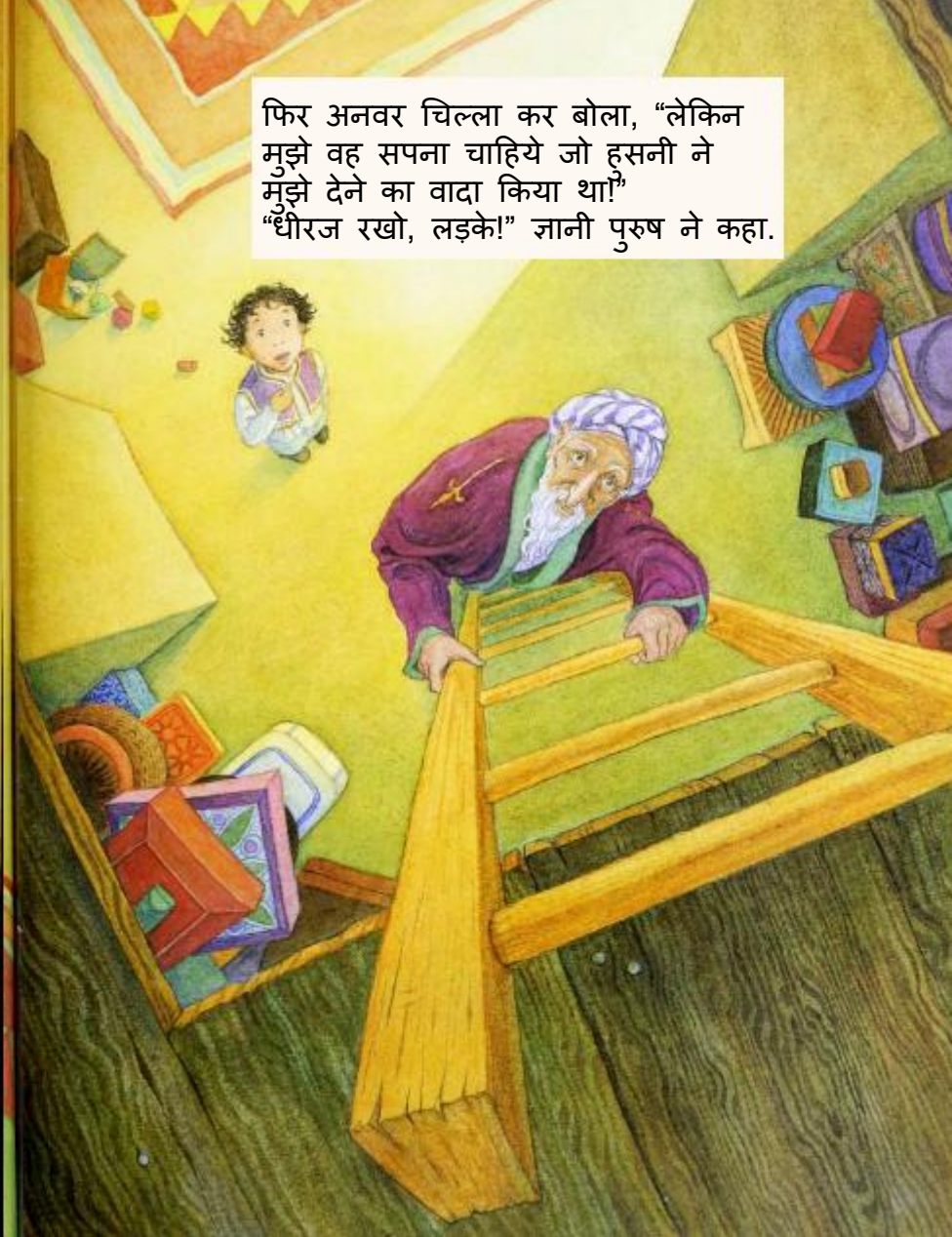
और उन्होंने एक दूसरा पिटारा उठाया और उसका ढक्कन खोला. "इस पिटारे में वह सपने हैं जो लोगों को नहीं चाहिये," उन्होंने कहा. "हुसनी अपने सपने को बाहर लाने के लिए अपने सिर को थपथपाओ और उस सपने को इस डिब्बे में डाल दो."

और हुसनी ने वैसा ही किया और निश्चय ही जब उसने अपने सिर को थपथपाया तो उसने देखा कि उसका सपना उसके हाथ में आ गया. और जब अपना हाथ वह पिटारे के पास ले गया तो सपना उछल कर पिटारे में चला गया.
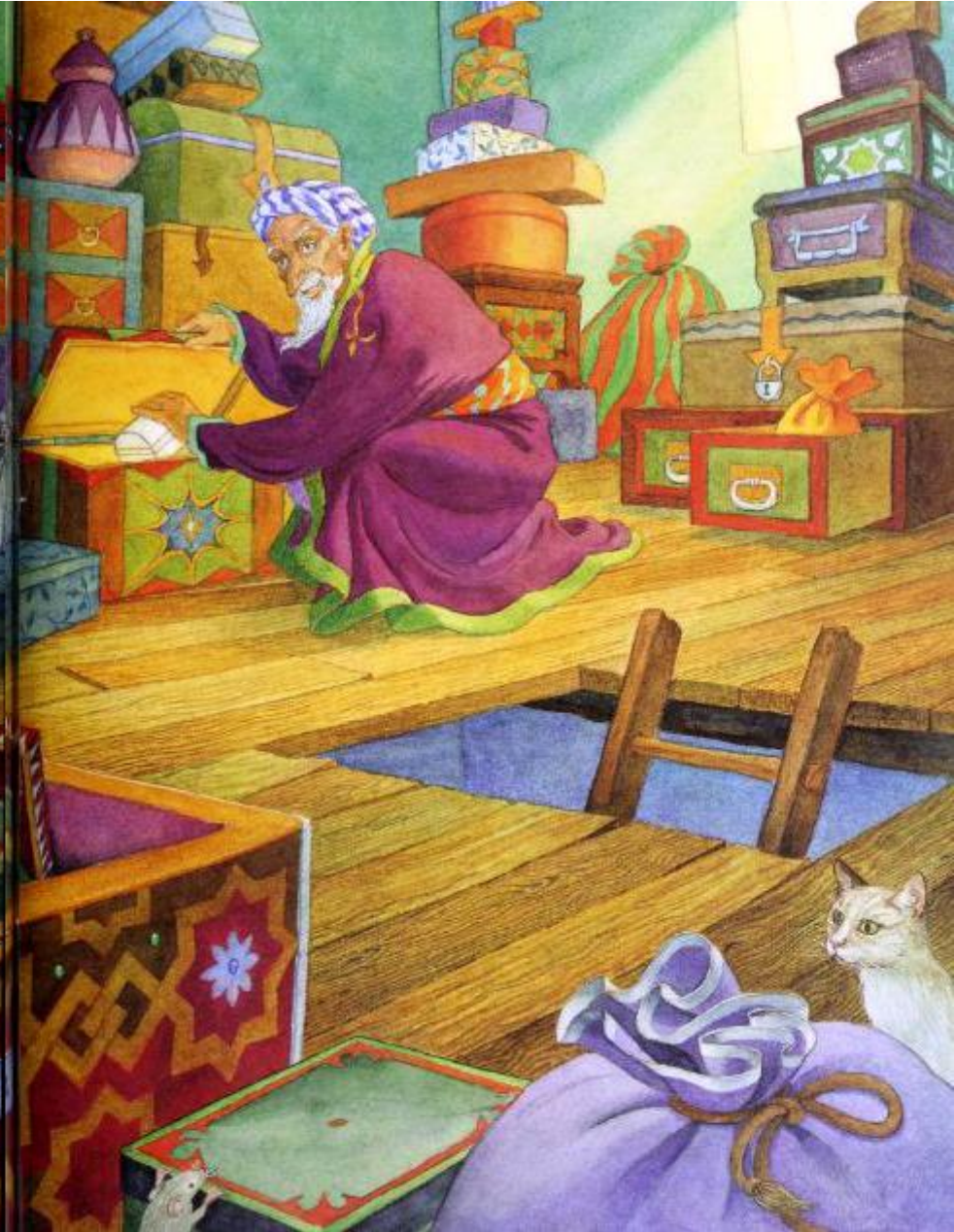
फिर उस ज्ञानी पुरुष ने एक अन्य पिटारा उठाया और उसे खोला और कहा, “यह पिटारा अद्भुत सपनों से भरा पड़ा है!” और दोनों लड़के देख सकते थे कि पिटारे के अंदर कई प्रकार के सुंदर सपने थे.
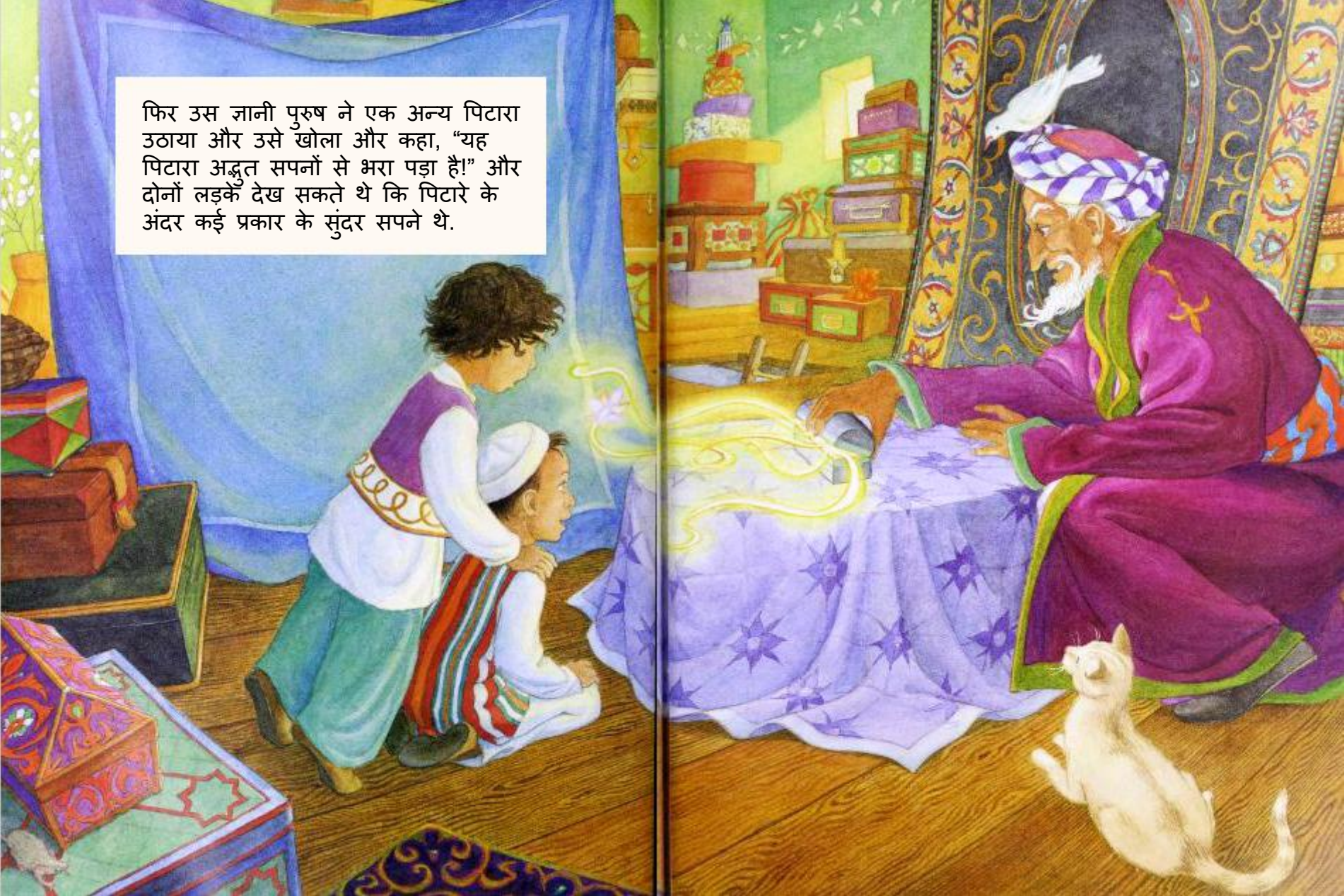
अद्भुत, आश्चर्यजनक सपने!
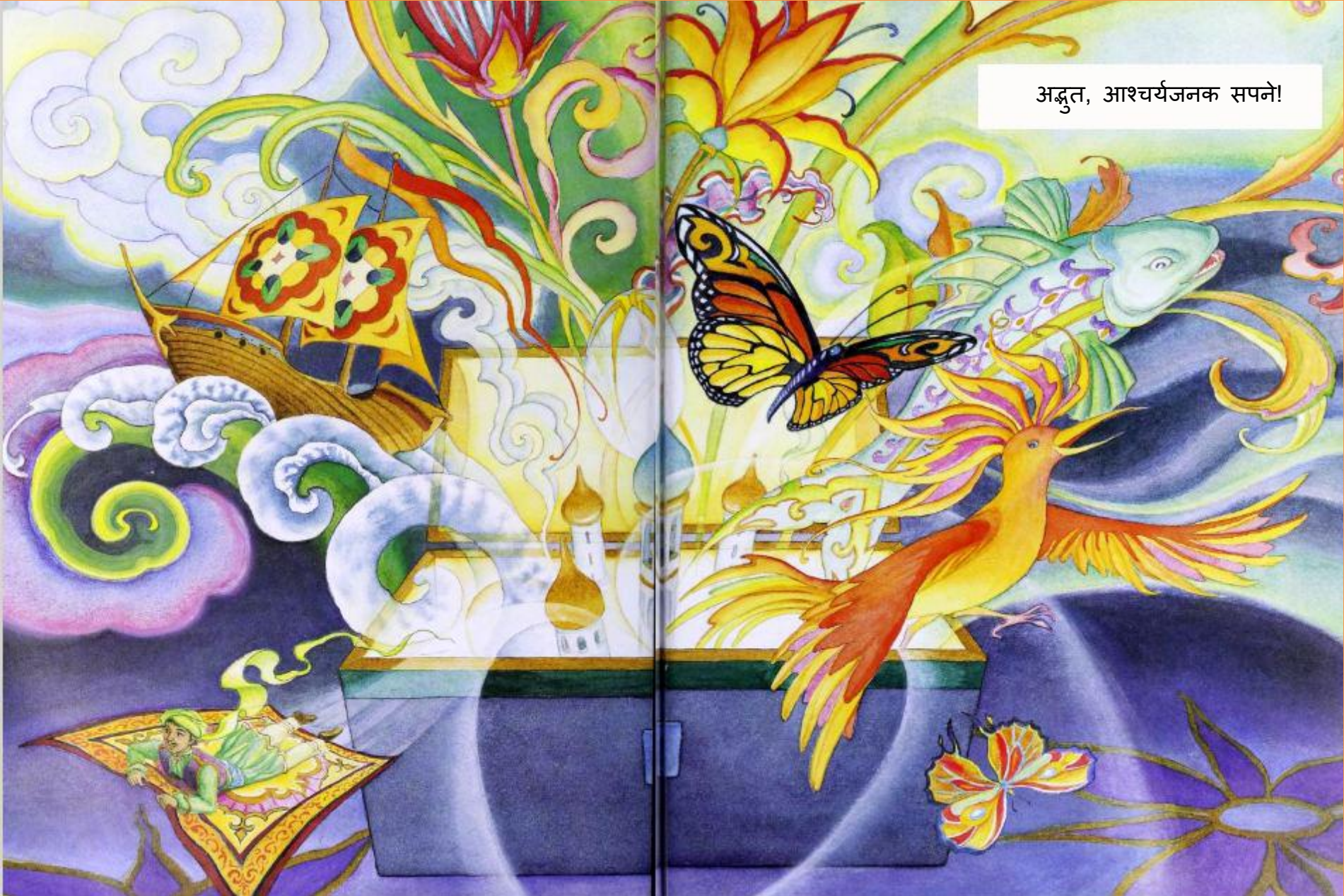
“मैं एक-एक सपना तुम दोनों को देने वाला हूँ,” ज्ञानी पुरुष ने कहा. और फिर उन्होंने दोनों से कहा कि अपने लिए एक-एक सपना चुन लें. और दोनों ने वैसा ही किया. और जैसे ही दोनों ने अपने-अपने सपने को छूआ, वह सपने उनकी बाँहों पर दौड़ कर उनके कंधों पर चढ़ गये, फिर उनके कानों में जाकर उनके सिरों के अंदर चले गये, वैसे ही जैसे हुसनी के नाम ने किया था.
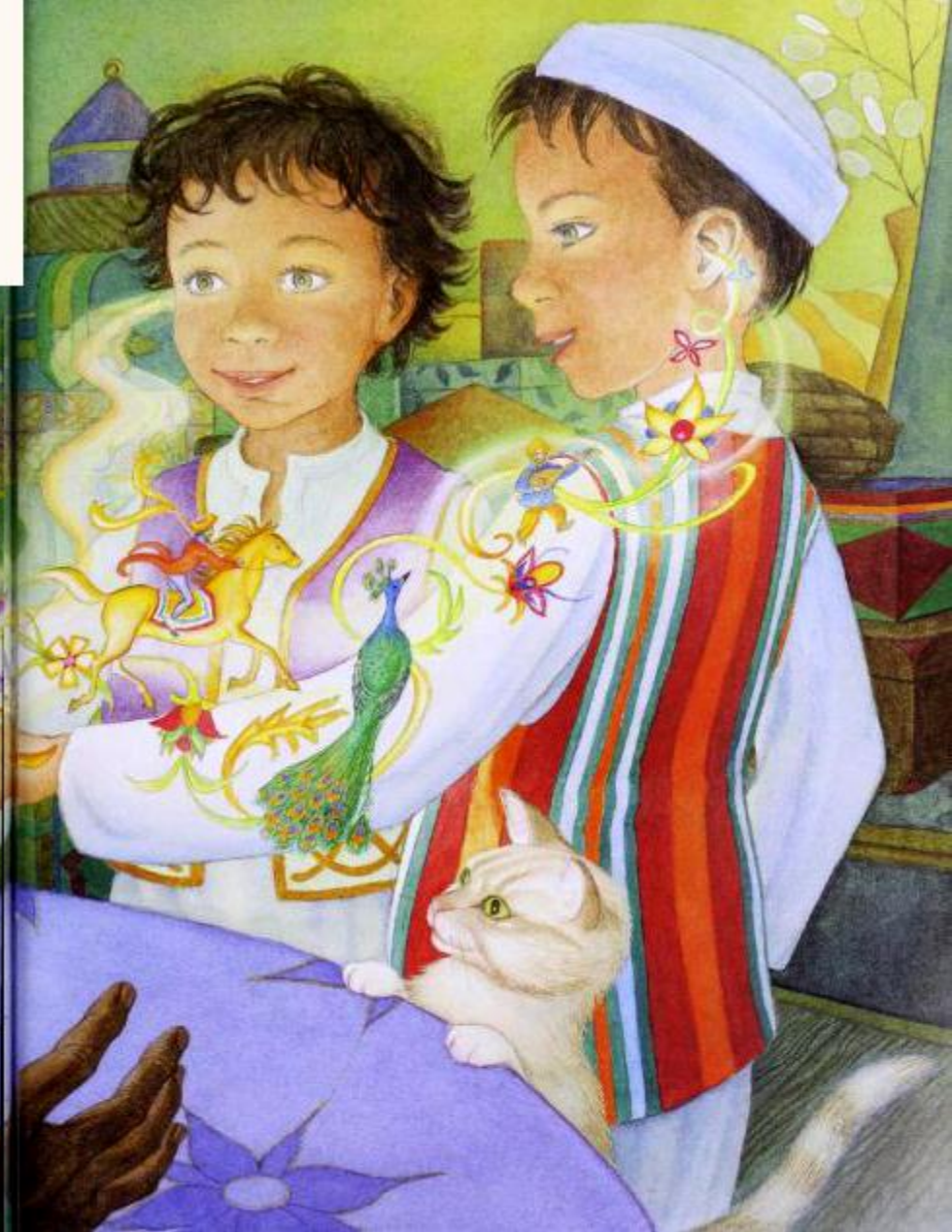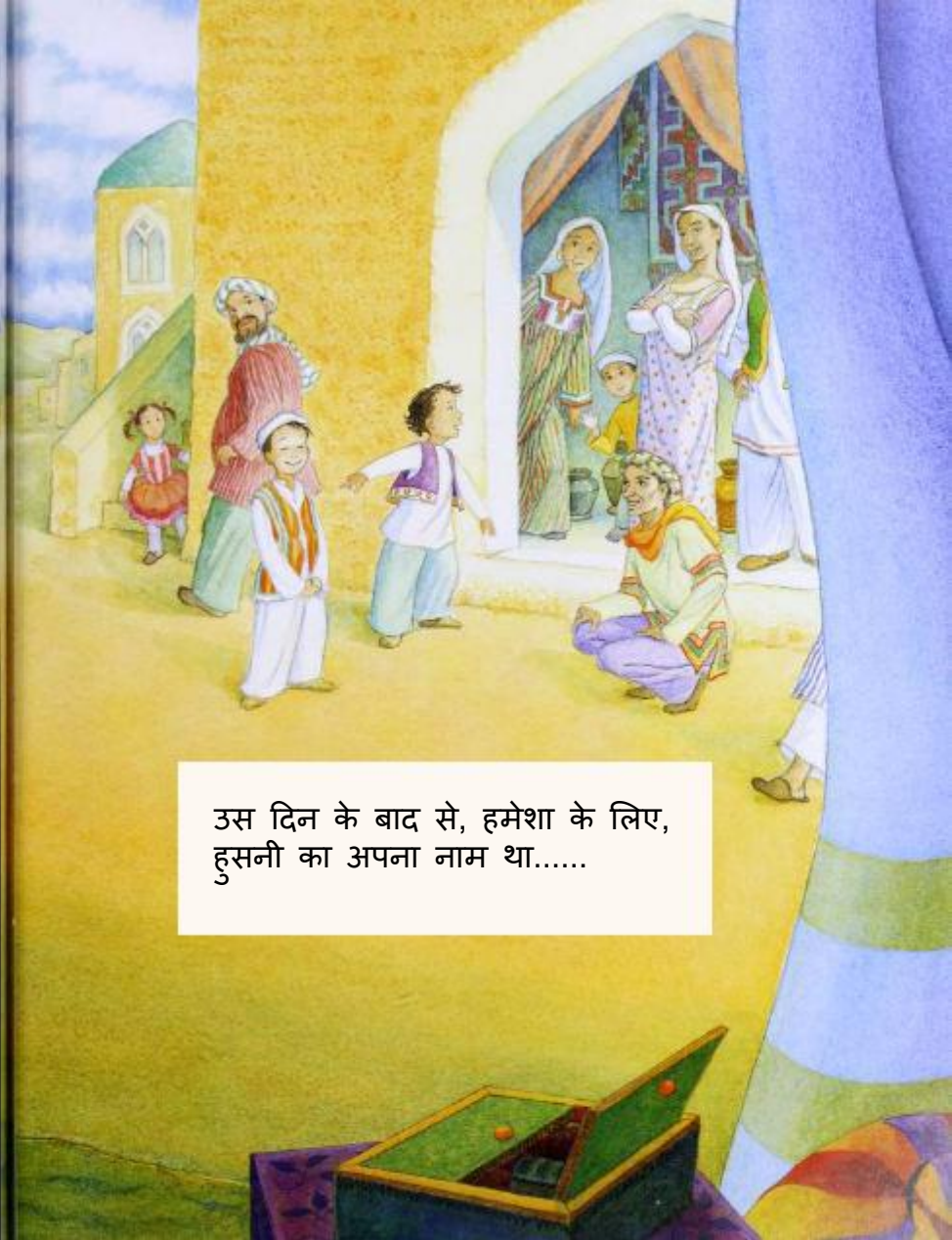
उस दिन के बाद से, हमेशा के लिए,
हुसनी का अपना नाम था......

और हुसनी और अनवर,
दोनों के पास सदा सुंदर सपने थे.

समाप्त